

अनमोल सवैया व दोहा,

1.कहे सन्त सगराम सुण ए,
धन री धणीयाणी,
सुकरत कर भज राम,
धोय कर बहते पाणी ।
बहते जळ कर धोयले,
मौकों दियो महाराज,
कारज करले जीव रो,
करणो हैं सो आज ।
करणो हैं सो आज,
काल री कोई न जाणी,
कहे सन्त सगराम सुण ए,
धन री धणीयाणी ॥

2.छह साँसो की एक पल,
घड़ी एक पल साठ,
आठ घड़ी का एक पहर,
सगराम दास कहे आठ ।
सांस सौ भर सातो ही,
अठहत्तर करोड़,
चौरासी लाख मिटाई,
भजन बिना सब खोय दिया,
अक्ल बायरी टाट ।
छह साँसो की एक पल,
घड़ी एक पल साठ ॥

3.सो विरला संसार,
सभा में बोले मीठा,
सो विरला संसार,
देख कर करे अदीठा ।
सो विरला संसार केयो,
अण केयो सम्भाले ।
सो विरला संसार,
प्रीत निर्धन सू पाले ।
जग जीवण रण थंभणा,
बच चाले पर नार,
कवि गिरधर कहे रे गुणीजणा,
वे लाधे विरला ही संसार ॥

4.एक सूम सत हीन ज्याको,
थू द्रव समर्पियो,
सूर और दातार ज्याको प्रभु,
थे निर्धन कर थरपियो ।
काळी कुचाल कुलखणी नार,
ज्याने भर चंचल लादो,
सुंदर और सुशील नार,
ज्यारें संग लफरी बांध्यो ।
नागर बेल निर्फल करी.
और तूम्बा बेल अकारणा,
कवि गीध कहे किरतार ने,
तू भूल गयो रे भव तारणा ॥

5.कही कही गोपाल की,
भई चौगुणी भूल,

काबुल में मेवा किया,
प्रभु बृज में किया बबूल ॥

6.कठिन प्रीत की रीत,
कठिन तन मन वश करणो,
कठिन योग जुग ध्यान,
कठिन भव सागर तिरणो ।
कठिन धर्म प्रतिपाल,
कठिन संकट में समता,
कठिन हैं पर उपकार,
कठिन मन मारण ममता ।
वचन निभावणो हैं कठिन,
और निर्धन सू नेह राखणो कठिन,
कवि बेताल कहे सुण विक्रमा,
ज्ञान युद्ध जीतणो हैं अति कठिन ॥

7.अरे प्रभु किसान छुणाउ महल,
महल गिरि मेरू कहावे,
किसा जु गाउ गुणगान,
गुण जो गांधर्व गावे ।
मेलु किसो धनमाल,
श्री जी चरणों आगे,
किसा पखारु चरण,
चरण नख गंगा लागे ।
किसा पुष्प चढ़ाऊँ,
सिर पर पारिजात वृक्ष तुज घरे,
राजाधिराज गिरिराज जो,
कवि ईसर थारी सेवा करे ॥

8.कहे सन्त सगराम,
धणी सुण रे माया रा,
कर सुकरत भज राम,
भला दिन आया थारा ।
दिन थारा आया भला,
चूक मती इण बार,
धन धरियो रह जावसी,
तनड़ों होसी क्षार ।
तन हो जासी क्षार,
धोय कर बहती धारा,
कहे सन्त सगराम,
धणी सुण रे माया रा ॥

9.राम छाप निर्वाण हैं और,
के नाम की छापा सब झूठी,
राम को नाम हिरदे धरले भाई,
राम के नाम की बाँधलो पूठी ।
राम के नाम से पत्थर तिर गया,
और तैतीसौ की बंदगी छूटी,
कहत कमाल कबीर सा,
की लड़की यू देखत देखत लंका लूटी ॥

10.राम के नाम पहाड़ तिरे,
अहेल्या तरी पग की रज रे,
पाण्डु नार को चीर अनन्ता बढियो,
जळ डूबत राख लियो गज रे ।
तोड़ सरासर दो टुकड़ा किया,
मिथिलेश की राख लीवी लज रे,

जिनकी रिछ,पाल गोपाल करे,
उनको बलभद्र कहाँ डर रे ॥

11.दया गरीबी बंदगी,
समता शील सुजान,
ए ते लक्षण सन्त के,
कहत कबीर सूजान ॥

12.दीन कहे धनवान सुखी,
धनवान कहे सुख राजा को भारी,
राजा कहे महाराजा सुखी,
महाराज कहे सुख इन्द्र को भारी ।
इन्द्र कहे ब्रह्मा सुखी,
ब्रह्मा कहे सुख विष्णु को भारी,
तुलसीदास विचार करे,
हरी भजन बिना सब जीव दुखियारी ॥

13.अल्प अवधि ज्यामे,
भ्रम को जंजाल बहुत,
करने को बहुत कुछ,
कहा कहा कीजिये ।
काव्य की कला अनंत,
छन्द को प्रबन्ध बहु,
वाणी तो अनेक चित,
कहाँ कहाँ दीजिये ।
पार न पुराण इको,
वेद उको अंत नाही,
राग तो रसीली रस,

कहाँ कहाँ पीजिये ।
सौ बातों री बात एक,
तुलसी यू पुकारें जात,
जन्म सुधारणो हैं तो,
राम राम कीजिये ॥

14.सतगुरु मिले सुजान,
श्रवण निज शब्द सुणायो ।
सिर पर धरियो हाथ,
भ्रम सब दूर भगायो ।
हिरदे सु उपज्यो ज्ञान,
ज्ञान उर अंदर लागो,
कियो ब्रह्म से नेह,
जगत से तोड़ियो तागों ।
रामचरण यू पाविये तू बन्दा,
छूटेला वाद विवाद ते,
सुन्दरदास सुखी भये,
यू गुरु दादू प्रसाद ते ॥

15.नमो श्री गुरु देवाय,
नमो सतगुरु देव,
नमो कर्ता अविनाशी,
अनंत करोड़ हरि भक्त नाथ,
नव सिद्ध चौरासी ।
नमो पीर पैगम्बरा,
ब्रह्मा विष्णु महेश को,
धरा गगन अगन पवन जळ,
नमो चाँद दिनेश को ॥

16.एक वोही नाम तारण,
करो उसको धारण,
जो निवारण करेगो ।
एक वोही नाम तारण,
सभी काम सारण,
धरो उसको धारण,
जो निवारण करेगो ।
नथा दन्त बाकु,
दिया दूध माँ कु,
खबर हैं खुदा कु,
सबर जो करेगो ।
तेरा दूढ सीना,
मिटे दिल का कीना,
जिन ये पेट दीना,
वो आप ही भरेगो ।
मुरादम कहे रे भाई,
मुकनंदर के अंदर,
जिन्हें टांक मारी,
न टारी टरेगो ॥

17.गूढ़ की बात को,
मूढ़ क्या जानत,
कुम्भ क्या जानत,
स्वेत जगह को ।
प्रीत की रीत अतीत,
क्या जानत,
भैंस क्या जानत,
खेत सगा को ।
बट की बात को,

जट क्या जानत,
गेला क्या जानत,
पाय लगा को ।
गंग कहे गुण वान सुणो भाई,
खर क्या जाने नीर गंगा को ॥

18. दया का होसी नाश,
धर्म वो जाय धरण में,
पुण्य गयो पाताल,
पाप भव वर्ण वर्ण में ।
अब तो राजा न करे जग न्याव,
प्रजा संग होत खवारी ।
घर घर होसी देव,
उबा नरत करे नर नारी,
उल्टो दत राजा मांगे,
शील संतोष किथे गयो ।
कवि बेताल कहे,
सुणो विक्रम समझलो कि,
अब कलजुग प्रगट भयो ॥

19. शब्द बराबर धन नहीं,
शब्द बराबर तोल,
हीरा तो दामों बिके,
शब्दों रो कोई तोल न मोल ॥

20. कोई करे उपवास,
कोई अन्न खाय आलूणा,
कोई खावे फळकन्द,

कोई बोले केई उनमुना ।
कोई ठंडे सिर राख,
कोई उंदे सिर झूले,
मनड़ों तो करे कुशती,
इतरा तो मोक्ष मार्ग ने भूले ।
भेक लियो अर भ्रम नहीं भागो,
फिर फिर करत बकवास हैं,
कहे प्रेम मुनि,
निज आत्म ज्ञान बिना तो,
ए सब माया रा दास हैं ॥

21.जड़ी बूटी जो कोई,
मुल्ला बणावे,
कोई भष्म बीच जाय,
शमसान जगावे,
कोई तापे पंच धूणी,
बतावे मन री हुली अर हूणी ।
आसन मार आस न मरी,
सहत भूख और प्यास हैं,
कहे प्रेम मुनि भाई रे,
निज आत्म ज्ञान बिना,
ए सब माया रा दास हैं ॥

22.कुम्भ में कूप समात नहीं,
सुत सिंधु समस्त चळू भरहे,
गणिका सुत पद रघुनाथ गुरु,
झिवरी सुत वेद हृदय धरहे ।
मकड़ी सुत चिरंजीव मारकण्डेय,

दासी सुत विधुर कृपा धरहे ।
सुत होत बड़ो अपनी करणी,
पृथु वंश बड़ो तो कहा करहे ।

गायक श्री प्रेमदान जी चारण ।
प्रेषक रामेश्वर लाल पँवार ।
आकाशवाणी सिंगर ।
9785126052

Source: <https://www.bharattemples.com/anmol-savaiya-aur-doha-sangrah/>



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZjyhhKzSUD-Lt9Tw>